Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

द्वादश माधव मंदिर में प्रतीक स्वरूपों का अध्ययन

सोनिका गुप्ता
शोध छात्रा, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Article Info
Publication Issue :
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
Page Number : 245-247

Article History
Received : 02 Dec 2023
Published : 21 Dec 2023

शोधसारांश - द्वादश माधव मंदिरों में विष्णु की मायाशक्ति के कई प्रतीकात्मक उदाहरण मिलते है। प्रतीक प्रस्तुत और प्राय: स्थूल पदार्थ होता है जो किसी अप्रस्तुत और सूक्ष्म भावों का अनुभव कराता है। अत: माधव के ये प्रतीक स्वरूप हमें कई सूक्ष्म प्रत्यय का बोध कराते हैं।

मुख्य शब्द - द्वादश, माधव मंदिर, विष्णु, प्रतीक, स्थूल पदार्थ, अप्रस्तुत, सूक्ष्म भाव।

भारतीय कला के अन्तर्गत अनेक धार्मिक–सामाजिक–दार्शनिक–आध्यात्मिक–सांस्कृतिक मूल्यों एवं मान्यताओं को कुछ विशिष्ट प्रतीकों के द्वारा उद्धृत करने की परम्परा प्राचीन काल से प्रवाहमान है। कला में मिथक एवं प्रतीक का प्रयोग कर कलाकार अपने कला की मोहक व मादक छवि प्रस्तुत करता है। मेरा शोधपत्र प्रयाग के द्वादश माधव मंदिरों में प्रयोग किये गये प्रतीक स्वरूपों के अवलोकन का एक प्रयास है। द्वादश माधव प्रयाग की विभिन्न दिशाओं में अपने आयुधों के साथ तीर्थयात्रियों और भक्तों की रक्षा में तत्पर रहते हैं, प्रयाग के प्रधान देवता हैं। प्रयाग महात्म्य शताध्यायी में माधवों के इन विविध स्वरूपों की विशद व्याख्या है। भगवान माधव (विष्णु) के समान कोई देवता नहीं है, गंगा के समान कोई नदी नहीं है तथा तीर्थशास्त्र प्रयाग के समान त्रैलोक्य में कोई तीर्थ नहीं है यथा–

'न माधव समो देवो न च गंगा समा नदी।
न तीर्थराज सदृशं क्षेत्रमस्ति जगत्त्रये।'[1] (ब्रह्मपुराण)

भगवान माधव अपने द्वादश रूपों में प्रयाग क्षेत्र में निवास करते है। प्रयाग के तीन क्षेत्र प्रमुख हैं। गंगा यमुना के मध्य का भाग गंगा, गंगा के पूर्व का भाग प्रतिष्ठानपुर (झूसी), यमुना के दक्षिण का भाग अलर्क (अरैल)। गंगा, यमुना और सरस्वती की त्रिवेणी के अधिष्ठाता माधव हैं जो बारह रूपों में इन तीनों क्षेत्रों में व्याप्त करके रहते हैं। माधव शब्द की व्युत्पत्ति भी बड़ी सुन्दर है –

मा च ब्रह्मस्वरूपा या मूल प्रकृतिरीश्वरी।
नारायणीति विख्याता विष्णुमाया सनातनी।।

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

महालक्ष्मी स्वरूपा च वेदमाता सरस्वती ।

राधा वसुन्धरा गंगा तासां स्वामी च माधवः ।।[2] (ब्रह्म वैवर्त पुराण)

अर्थात् ये शब्द ब्रह्मस्वरूप मूल प्रकृति का वाचक है। जो सम्पूर्ण सृष्टिकर्ती है। यही ईश्वरी–नारायणी सनातनी विष्णुमाया शब्द से विख्यात है। यही महालक्ष्मी स्वरूपा वेदमाता सरस्वती, राधा, पृथ्वी तथा गंगा है। इनका धन अर्थात् स्वामी माधव है।

✓वेणीमाधव मंदिर, निराला मार्ग, दारागंज में स्थित नागर शैली में बना है, जहाँ चतुर्भुज विग्रह से मुक्त शंख–चक्र–गदा–पद्मधारी माधव स्वरूप है। श्रीवत्स एवं कौस्तुभमणि धारण किए विष्णु का यह रूप सभी कामनाओं पूर्ति करते है। महंत लालपुरी द्वारा पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी द्वारा संरक्षित मंदिरों की एक लम्बी सूची प्रदान की गयी है जिसमें प्रयागराज सहित अन्य स्थानों में स्थित मंदिर सम्मिलित है।[3] दारागंज स्थित मंदिर का स्वामित्व महन्त परम्परा में पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी के आधिपत्य में है।[4] मन्दिर में द्वादश वेणी माधव के स्थान बनें हैं।[5]

✓ आदिवट/अक्षयवट माधव का दर्शन गंगा–यमुना के मध्य से ही होता है। अक्षयवट के मूल में वह माधव है। पत्तों की सघनता तथा गाढ़ा नीला रंग होने के कारण इसे श्यामवट भी कहा जाता है। पद्मपुराण में अक्षयवट[6] की चर्चा आई है, श्यामवट के पत्ते के पुट भाग पर श्री हरि विष्णु शयन करते हैं। इस वट के दाहिने भाग में सिद्धिवाचक वैष्णव पीठ है। यहीं मूल माधव का निवास है।

✓ अनन्त माधव को भगवान विष्णु की पाँचवी पीठ कहते हैं। सूर्य आदि देवतागण इनके अधीन है इसलिए इन्हें मनोकामना पूरक माधव भी कहते हैं। मंदिर दारागंज में स्थित है।

✓ असिमाधव का रंग अलसी पुष्प की तरह है, जो युवा है। घुंघराले बाल एवं भयंकर आकृति वाले है। जो पीत अम्बर धारण कर म्यान में तलवार लिये रहते है। ये शिव के समीप रहकर शिव की स्तुति करते है क्योंकि शिव परम वैष्णव है। नाग और नाग कन्याएँ इनकी सेवा में तत्पर रहती है। शहर के ईशान कोण में नागवासुकि के पास उनके नाम का पत्थर गड़ा है।

✓मनोहर माधव इसका विग्रह लक्ष्मीयुक्त विराजित है। जानसेनगंज चौक में द्रव्येश्वर नाथ महादेव के मंदिर में मनोहर माधव विराजमान है।

✓ बिन्दु माधव– बिन्दुमाधव पीठ द्रौपदी घाट क्षेत्र में गंगा किनारे स्थित है। यहाँ देवगण व भारद्वाज ऋषि सहित सातों ब्रह्मर्षि निवास करते हैं। भक्त को बिन्दु माधव के दर्शन के साथ इन सभी का पूजन–अर्चन भी आवश्यक होता है। मान्यता है कि महाभारत काल में पांडव जब प्रयाग आये थे तब द्रौपदी ने इस स्थान पर गंगा में स्नान किया था।[7] यहाँ लक्ष्मी व विष्णु की मूर्तियाँ है, छोटा–सा पत्थर का मन्दिर है यहाँ गर्भगृह के बाहर से ही पूजा होती है।

✓ श्री आदि/आदि वेणी माधव त्रिवेणी के मध्य जल रूप में विराजते हैं। इनका स्थान यमुना के दक्षिण तट पर सच्चा आश्रम के बगल जहाँ पर नरसिंह मंदिर है उसी के समीप है।

✓ चक्र माधव–चक्र द्वारा विपत्तियों का नाश करते हैं। चौदह विधाएँ चक्र माधव के अधीन है जिसका लाभ इनके दर्शन–पूजन से प्राप्त होता है। मंदिर प्रयाग के अग्नि कोण में अरैल में स्थित है। भगवान सोमेश्वर के मंदिर से लगा हुआ स्थल है।

✓श्री गदा माधव चित्त को व्याकुल करने वाले दुष्टों को अपनी गदा से भयभीत करते है। इनके भक्तों को काल का भय नहीं होता। सभी चौसठ प्रकार की कलाएँ गदा माधव के अधीन होती है। नैनी, छिंवकी स्टेशन के समीप श्री गदा माधव मंदिर स्थित है।

✓ पद्मपुराण/श्री पद्म माधव इनकी आँखे कमल की तरह लाल है और वे कमल की माला से सुशोभित है। योगियों को सिद्धि प्रदान करते हैं। घूरपुर से भीटा की ओर जाने वाले मार्ग पर वीकर देवरिया ग्राम में मंदिर स्थित हैं।

✓ संकटहर माधव प्रतिष्ठानपुरी झूसी स्थित संध्यावट है जहों न कोई मंदिर व नहीं कोई मूर्ति है। यहाँ दर्शनमात्र से ही सन्ध्योपासना न करने का पाप का शमन होता है।

✓ शंख माधव भूतों के प्रलय होने पर शंख के जल से क्षेत्र को घेरने वाले तथा शंख माधव माया पाश से रक्षा करते हैं। आठो सिद्धियों इनकी सेवा करती है। प्रतिष्ठानपुर (झुंसी) के छतनाग में मुंशी के बगीचे में मंदिर स्थित है।

अन्तर्वेदी में वेणीमाधव, आदिवट/अक्षयवट माधव, अनन्त माधव, असिमाधव, मनोहर माधव, बिन्दु माधव हैं। मध्यवेदी में श्री आदि माधव, चक्रमाधव, श्री गदामाधव एवं पद्मपुराण/पद्ममाधव हैं तथा बहिर्वेदी में संकटहरमाधव, तथा शंखमाधव है।

इस प्रकार हमें द्वादश माधव मंदिरों में विष्णु की मायाशक्ति के कई प्रतीकात्मक उदाहरण मिलते है। प्रतीक प्रस्तुत और प्राय: स्थूल पदार्थ होता है जो किसी अप्रस्तुत और सूक्ष्म भावों का अनुभव कराता है। अत: माधव के ये प्रतीक स्वरूप हमें कई सूक्ष्म प्रत्यय का बोध कराते हैं।

सन्दर्भग्रन्थ-

1. ब्रह्मपुराण से उल्लेखित
2. ब्रह्म वैवर्त पुराण से उल्लेखित
3. लालपुरी, 'श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी एवं दशनाम नागा संन्यासियों का संक्षिप्त परिचय', कनखल (1988), पृ0 7-10
4. डा0 प्रभाकर पाण्डेय, 'इलाहाबाद जिले की ऐतिहासिक इमारतों का अभिलेखीकरण', 2005, पृष्ठ-40
5. रामकृष्ण टण्डन एवं मीना टंडन, 'प्रयाग के प्राचीन मंदिर-एक धरोहर', 2017, पृष्ठ- 233
6. पद्मपुराण अ0 23 और 25, मत्स्य पुराण के अ0 104 तथा अग्निपुराण के अ0 111
7. रामकृष्ण टण्डन एवं मीना टंडन, 'प्रयाग के प्राचीन मंदिर-एक धरोहर', 2017, पृष्ठ- 235